बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 157 /2026) **Year: 8th**

जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि: 16.07.2026**

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	मानसून कमजोर रहने की संभावना है अतः सब्जियों की खेती में विशेष सतर्कता बरतने की आवश्यकता है और निम्नलिखित सुझाव पर अमल करें, समस्त सब्जियों की अल्प अवधि वाली प्रभेदों का उपयोग किया जाए। यथा भिंडी की काशी सहिष्णुए काशी पराक्रम, काशी उत्कर्ष, काशी लालिमा आदि, लोबिया में काशी निधिए काशी विशनए काशी श्यामलए काशी गौरी आदिए तरोई में काशी श्रेयाए काशी वंदनाए काशी कल्याणीए के स्वादिष्ट हाइब्रिड तरोई में काशी सौम्या, काशी रक्षिता आदि, सतपुतिया में काशी खुशी, लौकी ने काशी शुभ्रा, काशी कीर्ति आदि, कद्दू में काशी हरित, काशी बसंत आदि, करेला मे काशी प्रतिष्ठा, काशी मयूरी आदि, खीरा मे काशी नूतन, चौलाई मे काशी चौलाई.१। मृदा नमी संरक्षण तथा खर पतवार नियंत्रण की दृष्टि से समस्त फसलों की बुआई मेड़ी पर या उठी हुई क्यारियों में पलवार का प्रयोग करके ही करें। लोबिया, भिंडी, बैंगन टमाटर, मिर्च तथा कद्दू वर्गीय फसलों में काली पॉलीथिन अथवा सुखी घास की पलवार प्रयोग करे। कद्दू वर्गीय सब्जियों में तार झाड़ी अथवा पंडाल बनकर लताओं को ऊपर चढ़ने की व्यवस्था कर दें। फसलों को थ्रिप्स तथा सफेद मक्खी जैसे चूसक कीड़ों के प्रकोप से सुरक्षित रखने के लिए यथावश्यक उपयुक्त कीटनाशी का प्रयोग करें ।

		वर्षा ऋतु ;खरीफ हेतु टमाटर, बैगन, मिर्च की तैयार पौध की रोपाई कर दें तथा खरीफ प्याज की पौधशाला तैयार कर लें। सीधी बोई जाने वाली फसलों की भी उपरोक्त सुझावों के अनुसार बुआई कर दें। बुआई से पहले प्रति किलो बीज में २०० ग्राम कार्बेंडाजिम अथवा कैप्टन मिलाकर बीजोपचार करें तथा सिंचाई के जल में प्रति लीटर २ ग्राम कार्बेंडाजिम घोलकर ड्रेचिंग/ सिंचाई करें।
2-	**शस्य- प्रबंधन एवं मृदा- प्रबंधन**	**शस्य.प्रबंधन** **तिल** : तिल की बुवाई अच्छे जल निकास वाली हल्की व मध्यम मृदा विन्यास में करना चाहिये। ➢ उर्वरक की अनुपात 20–10– किग्रा0/हे0 नत्रजन – फास्फोरस की है। परन्तु जिन मृदाओं में कार्बनिक कार्बन और उपलब्ध फास्फोरस और सल्फर कम है वहाँ पर 20 किग्रा0 नत्रजन, 40 किग्रा0 फास्फोरस व 25 किग्रा0 सल्फर दे सकते है। **दलहनी फसल** ➢ खेत में बुवाई से 15–20 दिन पहले गोबर की खाद 5 टन/हे या 2 टन/हे0 केंचुआ खाद डाल कर जुताई करें। ➢ दलहनी फसलों के बीजों को राइबोजियम से उपचारित करके बुवाई करना चाहिये। ➢ बीज को उपचारित करने के लिये राइबोजियम 5 ग्रा0 प्रति किग्रा0 बीज की दर से उपयोग करें। **अरहर:** 25–60–30 किग्रा0 नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से उर्वरकों का प्रयोग करे। यदि मृदा में सल्फर की कमी है तो बुवाई के समय 20 किग्रा0 सल्फर प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें। ➢ जिंक की कमी होने पर 20 किग्रा0/हैक्टेयर की दर से उर्वरक का प्रयो प्रयोग करें। **उड़द** : फसल में 20 किग्रा0 नत्रजन प्रति हैक्टेयर 60 किग्रा0 फास्फोरस प्रति हैक्टेयर व 40 किग्रा पोटा'ा प्रति हैक्टेयर उपयोग करें। **धान** : धान की सीधी बोआई करें इससे पानी की बचत होगी । ➢ सूखे की दशा में सीधी बोआई फसल को नुक्सान से बचाता है । ➢ आवशयकतानुसार खरपतवारनाशी व कीट नाशक का प्रयोग करें। ➢ खरपतवार नियंत्रण हेतु नर्सरी में धान बोने से 3 दिन के भीतर १००० ग्राम पेंडीमेथालिन का छिड़काव करें अथवा बोने से १०–१२ दिन की अवस्था पर बिसपायरीबैक सोडियम २५ ग्राम का छिड़काव करें। **मृदा.प्रबंधन** ➢ खरीफ में बोई जाने वाली दलहन फसलों में 20:60:20, तिलहन फसलों में 90:50:30 एवं धान में 80:60:40 किग्रा0 एनपीके प्रति हे0 प्रयोग करें।

		➢ वर्षा के दौरान होने वाले मृदा क्षरण एवं मृदा कटाव को रोकने हेतु अपने – अपने खेतो का मेड बंधान लगातार करतें रहें। ➢ फासफोरस एवं पोटाष की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के समय तथा नत्रजन की षेष मात्रा खडी फसल में प्रयोग करें। ➢ विगत में मिट्टी परीक्षण हेतु भेजे गये मृदा नमूना परीक्षण की रिपोर्ट एकत्र कर नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से चर्चा कर खरीफ फसलो हेतु फसलानुसार उर्वरको की व्यवस्था अभी तक अगर न की हो तो अविलम्ब करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ वर्षा ऋतु के आगमन के साथ ही पशुओं में कई तरह के संक्रमण रोग जैसे खुरपका मुँहपका, लंगड़ी ज्वर गलधोटू चिकिन पॉक्स इत्यादि के संक्रमण का खतरा बढ जाता है जिसका उपचार कर पाना पशुपालको के लिए परेशानी का सबब होता है। इस कारण इन रोगो से बचाने के लिए टीकाकरण का कार्य प्रमुखता के साथ वर्षा शुरू होने से पहले कराया जाना अति आवश्यक है। अतः जिन पशुपालको ने अपने पशुओ में टीकाकरण नही कराया है वे सभी पशुपालक उपरोक्त बीमारियो से बचाव हेतु टीकाकरण पशुपालन विभाग के सहयोग से अवश्य करायें। ➢ इसके साथ ही पशुपालक ध्यान दे कि वर्षा ऋतु में पशुओं के बैठने के स्थान में सूखा रखना आवश्यक है गीले स्थानों पर पशुओं को बॉधनेसे कई जीवाणु जनित रोगों के फैलने का खतरा होता है। अतः पशुपालक नवजात व दुधारू पशओं को सूखे व छायादार स्थान पर ही बाँधे। ➢ हरे चारे की उपलब्धता से दुधारू पशुओं की भोज्य व्यवस्था को सुदृढ व पशुओं के पोषण पर होने वाले खर्च को भी कम किया जा सकता है। इसलिए इस समय पशुपालक व किसानबन्धु हरे चारे की फसलो मक्का, बाजरा, एम.पी. चरी, ज्वार नेपियर, घास इत्यादि की बुवाई कर सकते है। जिससे पशुओ को हरे चारे की उपलब्धता बनी रहे।
4–	**कीट– प्रबंधन**	➢ खड़ी फसलों तथा सब्जियों में नीम तेल / 5 मिली प्रति ली के घोल का छिड़काव करें इससे उपचारित खेतों को टिड्डियां कम नुकसान करती हैं। ➢ सब्जियों की फसलों में रस चूसने वाले व फल बेधक कीट के जैविक नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करें अथवा चार प्रतिशत नीम गिरी एवं 0.5 मिली0 लीटर स्टिकर (चिपकने वाला पदार्थ) प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर छिड़कने से जैसिड, सफेद मक्खी व मिली बग का प्रकोप कम हो जाता है।

		➢ आम के बागों में फल मक्खी के नियंत्रण हेतु ग्रसित फलों को प्रतिदिन इकट्ठा करके नष्ट कर देना चाहिए। मिथाइल यूजीनाल + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने घोल में 5 ग 5 ग 1.5 मिमी0 के प्लाईवुड के टुकड़ों को शोधित कर लगाने से फल मक्खी प्लाईवुड के टुकड़ों की ओर आकर्षित होती है। जिसे एकत्र करके नष्ट किया जा सकता है।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	➢
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	बागवानी वाली फसलों में अनेक कृषि कार्य जुलाई महीने में किये जाते है जैसे–फलदार पौधों की रोपाई, मूलवृन्त तैयार करने के लिए फल बीज की नर्सरी में बुवाई, जल निकास की व्यवस्था, खाद अवं उर्वरक प्रबंधन, खरपतवार प्रबंधन, अन्तरवर्ती फसलों की बुवाई, जल निकास की व्यवस्था, फल पौधों में कटिंग, कलम चढ़ाना, बारिश में लगने वाले प्रमुख कीट एवं रोग प्रबंधन इत्यादि कार्य किये जाते है **कुछ सामान्य ध्यान देने वाली बातें** ➢ फलदार वृक्ष जैसे आम, अमरुद, निम्बू, अनार, बेर, बेल ,इमली इत्यादि के पौधों के रोपाई का कार्य किसान भाई अवस्य शुरु कर दें । ➢ किसान भाई पौध लगाने से पहले प्रत्येक गढ्ढे की मिटटी में में २०–२५ किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद एवं एक किलोग्राम सुपर फास्फेट अवस्य दाल द। ➢ गुणवत्ता युक्त पौध तैयार करने के लिए मूलबृन्त की आवश्यकता होती है जिसके लिए फलों के बीज की बुवाई नर्सरी में अवस्य कर दें। ➢ अत्याधिक वर्षा के नुकसान से बचाने के लिए फल बागानों में सिचाई के लिए बनाई गई नालियों को जल निकास के काम में लेना चाहिए। ➢ पोषक तत्व प्रबंधन के अंतर्गत छोटे फल पौधों में ५० ग्राम नत्रजन प्रति पौधा आयु के हिसाब से देना चाहिए । ➢ फल देने वाले पौधों को जिंक सल्फेट (200 ग्राम/पौधा)तथा बोरोन (100 ग्राम/पौधा) देना चाहिए । **आम में मुख्य कृषि कार्य** ➢ आम के संस्तुत पूरी खाद एंड आधी उर्वरक की मात्रा का प्रयोग करें। ➢ नए बाग लगाने हेतु पौध रोपाई का कार्य प्रारम्भ करे। ➢ आम में गूटी बांधे । ➢ आम में कलम बांधने का कार्य किसान भाई शुरू कर दे । ➢ मूलवृन्त तैयार करने के लिए आम के गुठलियों का रोपण नर्सरी में करना चाहिए। **नींबू वर्गीय फलों में मुख्य कृषि कार्य** ➢ नींबू सन्तरा अवं मोसम्बी के प्रत्येक पौधे को 20–30 किलोग्राम सड़ी गोबर के खाद, 1–2 किलोग्राम यूरिया, 1–2 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 0.5 – 0.6 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति वर्ष देना चाहिए । ➢ मूलवृन्त तैयार करने हेतु रंगपुर लाइम, जट्टी–खट्टी के बीज की बुवाई नर्सरी में करें।

		➢ नींबू में गूटी बांधने का कार्य करे। ➢ सन्तरे अवं मौसम्बी में कलिकायन चढाने का कार्य करें। **पपीते में मुख्य कृषि कार्य** ➢ पित्त शिरा मोजैक विषाणु के नियंत्रण हेतु पौधों के छोटी अवस्था में ही विषाणु को फैलाने वाले कीटों (एफिड) का नियंत्रण एमिडाक्लोरोप्रिड (0.5 मिली/लीटर पानी) के छिड़काव से करें । ➢ पौध तैयार करने के लिए नर्सरी में उन्नतशील किस्मों के बीज जैसे– रेड लेडी, ताइवान, पूसा नन्हा, अर्का प्रभात इत्यादि के बीज के बुवाई करें। **अमरुद में प्रमुख कृषि कार्य** ➢ अमरुद में गुटी एवं परस्पर सम्बन्ध विधि से पौध तैयार करने का कार्य करें । ➢ नए बाग का रोपण करते समय उन्नतशील प्रजातिओं जैसे – लखनऊ–49, संगम, श्वेता, ललित, इत्यादि चयन करें। ➢ मूलवृन्त तैयार करने के लिए नर्सरी में बीजों के बुवाई करें। **आँवला में प्रमुख कृषि कार्य** ➢ काली फफूद के प्रकोप से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत घुलनशील गंधक का छिड़काव करें । ➢ जुलाई माह में उन्नतशील प्रजातियों जैसे– चकैया, कंचन, कृष्णा, बनारसी इत्यादि का रोपण करें । ➢ मूलवृन्त तैयार करने के लिए फलों के बीजो को नर्सरी में बुवाई करें । ➢ नए पौध बनाने के लिए कलिकायन चढाने का कार्य करें। **बेर में प्रमुख कृषि कार्य** ➢ पूर्व में तैयार गढ्ढों में पौध रोपण करें। ➢ छोटे बागों के बीच में हरी खाद हेतु ढैचा, सनई इत्यादि की बुवाई करें । ➢ नए पौध तैयार करने के लिए रूपांतरित छल्ला कलिकायन विधि का प्रयोग करें । **चीकू में प्रमुख कृषि कार्य** ➢ चीकू में कलम बांधने का कार्य करें । ➢ मूलवृन्त तैयार करने नर्सरी में खिरनी के बीज की बुवाई करें।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	**पौधों की ग्रेडिंग (विक्रय हेतु)** • बिक्री से पहले पौधों की लंबाई (ऊँचाई) एवं तने की मोटाई (कॉलर डायामीटर) के आधार पर ग्रेडिंग अवश्य करें। • ग्रेड '।' – अधिक ऊँचाई, सीधा तना, अच्छी जड़ें, मोटा तना (बेहतर दाम)। • ग्रेड 'ठ' – मध्यम आकार, कुछ कमजोर जड़, स्थानीय उपयोग हेतु।

		• खराब/रोगग्रस्त पौधे – अलग करें (जलाएँ या नष्ट करें, जिससे रोग न फैले)। • मजबूत, रोगमुक्त एवं सुपाच्य जड़–प्रणाली वाले पौधे ही रोपण हेतु चुनें। **पौध सामग्री** • बुंदेलखंड की जलवायु को देखते हुए, आगामी वर्ष के रोपण हेतु पौध तैयार करने के लिए जामुन, नीम, लाल चंदन, रोज़वुड, शीशम, महुआ, मालाबार नीम महुआ, आम, करौंदा, कटहल, कचनार, चिरौंजी, अमलतास, पलास, गुलमोहर, कैजुरिना व नीम जैसी प्रजातियों की बुआई जुलाई माह कर लें। • जिन प्रजातियों के बीजों का छिलका कठोर होता है (जैसे – शीशम, अमलतास, पलास, गुलमोहर) और जो देर से अंकुरित होते हैं, उन्हें बोने से पहले रातभर (लगभग 12–18 घंटे) पानी में भिगोना अत्यंत आवश्यक है – इससे बीज की सुप्तावस्था (डॉर्मेंसी) टूटती है और अंकुरण प्रतिशत बढ़ता है। **जुलाई – वृक्षारोपण का सही समय** • अच्छी वर्षा (कम से कम 3–4 दिन लगातार बारिश) के बाद ही वृक्षारोपण शुरू करें –जलभराव से बचें, लेकिन नम मिट्टी में रोपण करें। ➢ रोपण के लिए गड्ढे (1 फीट ग 1 फीट ग 1 फीट) पहले से खोदें और उसमें गोबर की खाद + नीम केक + ट्राइकोडर्मा मिलाएँ ताकि जड़ें जल्दी विकसित हों।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	7.डॉ दिनेश गुप्ता
2. डॉ दिनेश साह	8.डॉ पंकज कुमार ओझा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	10. डॉ जगन्नाथ पाठक
5. डॉ राकेश पाण्डेय	11.डॉ धर्मेन्द्र कुमार
6. डॉ मयंक दुबे	